चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति नारी

विमलेन्दु भूषण द्विवेदी*

भारतीय समाज विभिन्न परिस्थितियों का अद्भुत मिश्रण है। यहाँ पर मानवीय गरिमा एवं पीड़ा को वास्तविक पक्षों से समझने की अपेक्षा व्याख्याओं पर निर्भरता की मानसिकता भी मिलती है। ऐसे सभी पक्षों में नारी संबंधी समस्याओं पर की गई व्याख्याओं में विडंबना परिलक्षित होती है। यह विडंबना कई मौकों पर कई लोगों ने कई माध्यमों से रेखांकित भी किया है। हिन्दी कथा साहित्य में भी ऐसी पीड़ाओं को ठीक से पहचान कर रेखांकित किया गया है। कई रचनाकारों ने विभिन्न समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। समाज की विडंबनाओं में सबसे अहम विडंबना नारी संबंधी चिंतन एवं दृष्टिकोण है। वास्तविक धरातल से देखने पर यह पक्ष स्पष्टतः होता है कि वास्तव में नारी त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति होती हैं। उनकी गरिमा एवं पीड़ा को समाज के लोग सही ढंग से समझ सकने में अक्षम होते है।

'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' की मान्यता वाली भारतीय संस्कृति के वैदिक काल में महिलाओं को पुरूषों के समान प्रस्थिति प्राप्त थी। अपनी शिक्षा, बौद्धिकता के आधार पर स्त्रियाँ अपना स्वतंत्र कार्यक्षेत्र व स्थिति निर्मित कर सकने में स्वतंत्र थीं। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को शक्ति का प्रतीक माना गया। मनु के धर्मशास्त्र के तहत् महिलाओं को धार्मिक संस्कारों के निष्पादन के क्रम में पुरूषों के साथ विशेष भूमिका व अधिकार दिया गया। बौद्ध व जैन धर्म में महिलाओं को कोई विशेष स्थान नहीं दिया गया। राजपूत काल में बाल विवाह, जौहर प्रथा, कन्या वध की घटनाओं के रूप में स्त्रियों की स्थिति अंधकारपूर्ण रही। सल्तनत व मुगल काल के दौरान महिलाओं को हरम की वस्तु मात्र समझा गया। सतीप्रथा के रूप में अपने सतीत्व की रक्षा हेतु पति की मृत्यु के बाद महिला द्वारा स्वैच्छिक आत्मदाह की कुप्रथाएँ सामने आयीं। आधुनिक काल में विभिन्न संगठनों, आंदोलनों एवं अधिनियमों के द्वारा महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया गया, लेकिन समस्याएँ आज भी कुछ परिवर्तित रूप में विद्यमान

(शोध छात्र)म. गॉ. चि. ग्रा. वि. वि., चित्रकूट, सतना, म. प्र.

है। महिला लेखिका होने के नाते त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति भारतीय नारियों पर लेखनी चलाना मुद्गल के लिए लाजिमी है।

नारी त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति होती है, जो दूसरों की प्रसन्नता के लिए अपने सुख एवं वैभव का परित्याग कर देती हैं और परित्याग की उन्हें मलाल नहीं बल्कि, इसमें वह खुशी प्राप्त करती है। 'ट्रेन छूटने तक' कहानी की शुभा पिता की मृत्यु के बाद अपने घर का खर्च संभालने के लिए नौकरी करती है, जिसके कारण उसकी इच्छाएँ दमित हो जाती हैं। उसे न चाहते हुए भी नौकरी की विवशता को झेलना पड़ता है। बेटे के होते हुए भी माँ नहीं चाहती कि शुभा विवाह करे। इंटर में कई बार अनुत्तीर्ण होने पर मॉ ने बेटे सुरेश की पढ़ाई जारी रखी। बेटी–बेटे के इस भेदभाव ने शुभा को विचलित कर दिया था– ''पिछले नौ महीने से वह सर्विस करता था, उसने कभी एक भी पैसा घरखर्च के लिए तुम्हें दिया था .....?''[1] इस प्रकार पिता के घर को बचाने के लिए शुभा शादी न करने का निर्णय लेकर त्याग का परिचय देती है। जबकि बेटा सुरेश ने एक बच्चे की माँ, तलाकशुदा गोवानी लड़की से शादी कर ली थी और हमेशा के लिए घर छोड़कर उसके घर में रहने के लिए चला गया था।

नारी प्रेम की परिणति विवाह में चाहती है, लेकिन जब उसके इन भावनाओं को आघात लगता है, तब वह अपने त्याग का परिचय देती हुई टूटने–जुड़ने की प्रक्रिया से गुजरती है। 'सफेद सेनारा' कहानी में लेखक शरद कवयित्री शुभा से प्रेम करते है। इस प्रेम की परिणति शुभा के कोख में पल रहे शरद के बच्चे के रूप में होती है। शरद का शुभा से मन भर जाने पर वह मुँह मोड़ लेता है, लेकिन शुभा अपने बच्चे के प्रति त्याग करती है और बच्चे को जन्म देकर उसकी परवरिश करना चाहती है। शरद के एक सत्कार समारोह में शुभा की पुरानी यादें स्मरण हो जाती हैं जिसमें वह एक सम्पन्न परिवार की बालविधवा से विवाह करने वाला था। शुभा कहती है– ''जिसकी यादें ही सांस हैं मेरी और जो मुझे उसके बिना जिंदा रखे हुए है और जिन यादों के डेरे ने मुझे कभी अकेला नहीं होने दिया, मुझे उनकी परवाह करनी चाहिए। क्यों, क्यों इतनी दीन–हीन हो रही हूँ?.....[2] शुभा को उस विधवा वागदत्ता पर चिन्ता होती है कि कहीं उसके साथ भी ऐसा कुछ ना हो जाये जो मेरे साथ हुआ। शुभा कहती है ''अब अपनी बेवकूफी पर पछतावा भी नहीं होता, पर आपकी होने वाली इन विधवा वाग्दत्ता के लिए चिंतित हूं मैं। कितना जानती है ये आपको। या इनकी समझ भी प्रेम की धुंध में डूब चुकी है। दया आती है मुझे इन पर ठीक वैसे ही, जैसे आपको देर तक अपने कालेज के गेट के पास अपनी प्रतीक्षा में विकल खड़े हुए पाकर उपजती थी मन में।''[3] शुभा कहती है '' सचमुच

आप जैसे महान लेखक के लिए दुनियाँ मे उद्धार करने के लिए और भी बहुत से शापग्रस्त लोग है।''[4] इतना ही नहीं शुभा लेखक की शादी में उपहार के साथ जाने के लिए सोचती है। इस प्रकार शुभा कर्त्तव्य निर्वहन में अपने जीवन का सर्वस्व खो देती है।

समाज के सभी व्यक्ति चाहे वे पुरूष हो अथवा स्त्री आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होना पसंद करते हैं। परंतु हमारे समाज में आज भी ऐसे पुरूषों की भरमार है, जो पत्नी को केवल शोभा की वस्तु समझते हैं। नारी के समूचे व्यक्तित्व एवं कार्यकुशलता को कुचलकर उन्हें नौकरी न करने देकर घर की चहरदिवारी में कैद कर उनमें समर्पण भावना को कूट–कूट कर भर दिया जाता है। चित्रा मुद्गल की कहानियों में ऐसी कई पढ़ी लिखी स्त्रियाँ विद्यमान हैं। 'इस हमाम में' कहानी का सोमेश अपनी पत्नी द्वारा नौकरी किए जाने के सख्त खिलाफ है। वह नहीं चाहता कि पत्नी के व्यक्तित्व के सामने उसका व्यक्तित्व बौना हो जाए। वह कहता है– ''नौकरी की तुम्हें क्या जरूरत आ पड़ी ?.....''समय ही काटना है न! लिख–पढ़कर भी तो समय गुजारा जा सकता है।''[5] पत्नी सोचती है– '' सोमेश महसूस ही नहीं करते कि अब मैं पढ़ते–पढ़ते थक गई हूं , सोते–सोते थक गई हूं, दिन भर टेबल–कुर्सियां, कुशन झाड़ते–पोंछते थक गई हूं सिर्फ उनकी और उनकी ही बातें सुनते–सुनते थक गई हूं। न किसी के संग उठना–बैठना, न कहीं मन–मुताबिक आना जाना। आना जाना भी हो तो सोमेश की उपस्थिति का दबाव हर पल किसी पीछा करते हुए व्यक्ति की कड़ी निगरानी के आतंक–सा मन को बंधक बनाए रहता है।''[6]

'अभी–भी' कहानी की शिल्पा भी पढ़ी–लिखी स्त्री है। कहानी में शिल्पा विद्रोह अवश्य करती है, लेकिन वह विद्रेाही प्रवृत्ति की नारी नहीं है। पारिवारिक प्रतिष्ठा के नाम पर सास के कहने पर वह पति मुकेश की मृत्यु के बाद देवर से पुनर्विवाह भी कर लेती है। ''सामाजिक और पारिवारिक सुरक्षा प्रदान करने की आड़ में कितनी पटुता से उसकी भावनाओं और विवेक को छला गया। वह सोच भी कैसे सकती थी कि अपने दूसरे बेटे से उसके ब्याह का प्रस्ताव उसे एक सुनिश्चित भविष्य देने की दुरदर्शिता नहीं, बल्कि मुकेश के मरणोपरांत प्राप्त रकम और संपत्ति को हथियाने का षड्यंत्र था।''[7]

आज की पितृसत्तात्मक समाज में नारी की निर्णय स्वतंत्रता का कोई महत्त्व नहीं है। 'मुआवजा' कहानी की शैलू कहती है–''हमने तय किया है कि जितनी जल्दी आप लोग ब्याह निश्चित कर देंगे, हम अपनी गृहस्थी शुरू कर देंगे, मगर आपकी सहमति के बिना नहीं।''[8] शैलू के निधन पर जब उसके माँ–बाप मुआवजे की राशि नारी–निकेतन को देने की बात करते हैं तो छह वर्षों से अपनी

पत्नी से अलग रहने वाला पति सुमित अपना अधिकार प्रस्तुत करता है– ''मैं शैलू का पति हूं, उसकी किसी भी प्रकार की संपत्ति पर मेरा अधिकार पहले बनता है।''[9] इस पर शैलू की माँ कहती है– ''जिन अधिकारों से पति नाम के जीव ने उसे जीते–जी वंचित रखा, मुआवजे की रकम घोषित होते ही अचानक वह उस घर की इज्जत हो गई।''[10]

इसी प्रकार का त्याग 'लकडबग्घा' नामक कहानी में दिखाया गया है। पछाहवाली विवाह होते ही पति के गायब हो जाने के कारण विभिन्न प्रकार के लाछन सहन करती है। लंबरदार अपने बच्चों को उन्नाव में रखकर आगे पढ़ाने का निश्चय कर रहे हैं लेकिन, पछाहवाली की बेटी पुनिया को त्रियाचरित्र कहकर लांछित किया जा रहा है। पछाहवाली अपनी बेटी को डॉक्टर बनाने का संकल्प लेती है। ''हॉ, हॉ, हमका पक्का प्रबंध चही ..... पुनिया हमरी भांति जाहिल–काहिल न रही, आज हम चार अक्षर पढ़ी–लिखी होतिन तो कोहू के आसरे चौका–बासन निबटावति पड़ी रही होतिन! हमार जिनगी कढ़िलत–घसिटत बीत गई। हमार भाग्य ..... मगर हम अपनी बिटिया क पढ़ैबे, वहिका अपने बाप की नाईं डाकदरी पढ़ैक है.... पुनिया डाकदर बनी! इहां संभव न होई तो हम वोहिका अपनी बहिनी के घर इलाहाबाद म राखि क पढ़ैबै। हमार अलगा–अलगी कर दियो, लंबरदार! हमरे हाथ चार पइसा होई तो हम पाई–पाई के मोहताज तो न होइबे कोहू के।''[11] इस दुःसाहस के बदले उसे अपना प्राण न्यौछावर करना पड़ता है। इस तरह पंछाहवाली अपनी बच्ची के लिए प्राणों का बलिदान देती है।

परिवार और समुदाय के पुरूषों के मुकाबले महिलाएँ अपनी और दूसरों की जिंदगी में अधिक परिवर्तन लाती है लेकिन, भारत में महिलाएँ निचले स्तर पर हैं। महिलाओं के खिलाफ अपराध से कोई देश अछूता नहीं है। वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन, डिपार्टमेंट ऑफ रिप्रोडक्टिव हेल्थ एण्ड रिसर्च के 2013 के ऑकड़े कहते हैं कि दुनिया भर की 35 महिलाओं को किसी न किसी स्थिति में अपने इनटिमेंट पार्टनर यानी अंतरंग साथी की हिंसा का शिकार होना पड़ता है। वह यौन या शारीरिक हिंसा कुछ भी हो सकती है।[12] भारत के सन्दर्भ में ऑकड़े यह दर्शाते हैं कि पिछले एक दशक में महिलाओं के खिलाफ अपराध दो गुने हुए हैं। इंडिया स्पेंड के एक सर्वेक्षण के मुताबिक, देश में हर घंटे में महिलाओं के खिलाफ 26 हिंसक मामले दर्ज होते हैं।

देश भर में महिलाओं के खिलाफ होने वाले मुख्य अपराधों में भारतीय दंड संहिता की धारा 498 ए के तहत पति या संबंधियों द्वारा की गई क्रूरता का सबसे बड़ा हिस्सा है। महिला के शील को भंग करने के इरादे से उस पर हमला करना, जिसे पहले भारतीय दंड संहिता की धारा 354 के तहत छेड़छाड़ के रूप में वर्गीकृत

किया जाता है, पिछले एक दशक में महिलाओं के खिलाफ दूसरा सबसे बड़ा अपराध है। तीसरा सबसे बड़ा अपराध बलात्कार और दहेज उत्पीड़न का है।[13]

महिलाओं और बच्चियों के खिलाफ की जाने वाली हिंसा, आज मानवाधिकार का सबसे बड़ा उल्लंघन है। महिलाओं व बच्चियों के साथ हुए अपराध का यह ऑकड़ा समाज में नारी की वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। अपने जीवन के प्रारम्भिक चरण से लेकर अन्तिम तक के प्रत्येक चरण में अपनी खुशी का बलिदान कर दूसरे के चेहरे पर खुशी देखती त्याग एंव बलिदान की प्रतिमूर्ति नारी के साथ हो रहे इस प्रकार का अपराध सोचनीय व निन्दनीय है।

नारियों के सम्मान के लिए विभिन्न प्रकार के आन्दोलन प्रारम्भ से ही होते आ रहे हैं। सरकार ने भी समय–समय पर महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है लेकिन, इसके साथ–साथ समाज को भी अपनी मानसिकता में बदलाव लाना पड़ेगा। भगवान राम को अपना आदर्श मानने वाले लोग भी बलिदान की साक्षात् प्रतिमूर्ति सीता को राम द्वारा त्याग करने के प्रसंग को सुनकर द्रवित हो उठते हैं और उनके मन में चाहे–अनचाहे राम के प्रति एक विपरीत भावना उठ खड़ी होती है, वैसे सीता के त्याग का पश्चाताप राम को भी रहता है।

वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी ने महिलाओं के त्याग एवं बलिदान के महत्त्व को सम्मान देते हुए कहते हैं–''एक राष्ट्र हमेशा ही अपने यहॉ की महिलाओं से सशक्त बनता है। वह माँ, बहन और पत्नी की भूमिकाओं में अपने नागरिकों का पालन–पोषण करती है और तब जाकर ये सशक्त नागरिक एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका निभाते हैं।[14] इसके अतिरिक्त मोदी जी ने कहा कि हमारे यहॉ की महिलाएँ तय समय सीमा में एक साथ विभिन्न कार्यों को संचालित करने में दक्ष होती हैं।

चित्रा मुद्गल ने अपने साहित्यकार होने के दायित्व को पूर्णतः निभाते हुए समाज में उपेक्षित नारी के त्याग एवं बलिदान के रूप को समाज के सामने रख पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर उन्हें पुनः सोचने पर मजबूर कर देती हैं। आज विश्व में यह मांग बढ़ने लगी है कि महिलाओं को संबोधित करके ही आर्थिक और सामाजिक नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. चित्रा मुद्गल, आदि–अनादि–1, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 45
2. वही, पृ0 51
3. वही

4. वही, पृ0 54
5. चित्रा मुद्गल, आदि–अनादि–2, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009,पृ0 55
6. वही
7. चित्रा मुद्गल, आदि–अनादि–3, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 20
8. चित्रा मुद्गल, आदि–अनादि – 2, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 249
9. वही, पृ0 252
10. वही, पृ0 253
11. चित्रा मुद्गल, आदि–अनादि – 3, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 32
12. योजना, अंक 9, सितम्बर 2016, पृ0 47
13. वही, पृ0 48
14. वही, पृ0 23